शिव आमंत्रण

RNI NO. - RJHIN/2013/53539, Postal Regd. - RJ/SRO/9662/2015-2017, Posting on 18 & 20 of Every Month only at shantivan Sub-Post Office, Abu Road, Raj - 307510

वर्ष: 2, अंक: 6 | शिवरात्रि महापर्व पर विशेष | RNI: RJHIN/ 2013/ 53539 | हिंदी (मासिक), फरवरी 2015 सिरोही, पृष्ठ: 4, मूल्य: पांच रुपए

यहां स्पष्ट रूप से आत्मा के ज्ञान की व्याख्या की जाती है....
जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, अध्यक्ष, विश्व कल्याण परिषद, दिल्ली...पेज- 4

सभी देवों के भी देव हैं महादेव...
पेज- 2

मैं बाबा के संग और बाबा मेरे संग हमेशा रहते हैं...
राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़...पेज-3

शिव और शंकर में है महान अंतर...
पेज- 3

आप भी कर सकते हैं परमात्मा से संवाद
...पेज- 4

यह सच है परमात्मा आ चुके हैं
रमेश गर्ग, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, गुवाहाटी, उच्च न्यायालय..पेज 4

धरती पर आ चुके हैं भगवान : मिलन मनाने का सुनहरा अवसर

परमात्म शक्ति से हो रहा महापरिवर्तन

137 देशों में संस्था के सेवाकेंद्र | **9000** से अधिक सेवाकेंद्र संचालित | **1937** में संस्था की स्थापना

दुनिया तेजी से बदल रही है, प्रकृति, पुरुष और सत्ता सभी में बदलाव हो रहा है। यह कलियुग के अंतिम चरण और सतयुग के प्रारम्भ का समय है। परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन हो रहा है। तीन सत्ताएं काम कर रही हैं- परम सत्ता (सर्वोच्च सत्ता), मनुष्य आत्माएं और प्रकृति। वर्तमान समय मनुष्यात्माओं के कर्म इतने निम्न स्तर के हो गए हैं कि इनका उल्लेख शास्त्रों में भी नहीं है। इसका सीधा असर चारों ओर बाढ़, सुनामी, भूकंप के रूप में प्रकृति का रौद्र रूप सर्वविदित है। इतिहास इसका साक्षी है जब सृष्टि चक्र में ऐसी स्थिति मनुष्य और समाज की हो जाती है तो विश्व का परिवर्तन अवश्यम्भावी है। यह परिवर्तन परमात्माा के सान्निध्य में होता है। इसमें मनुष्यात्मा और प्रकृति दोनों ही पवित्र और सतोप्रधान बनते हैं। फिर नयी दुनिया का आगमन होता है। आज उसी घड़ी से हम गुजर रहे हैं। एक तरफ आसुरी प्रवृत्तियों का बढ़ता तांडव, दूसरी ओर परमात्म शक्ति द्वारा पूरे विश्व का परिवर्तन दोनों जारी है। यह समय नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी समान बनने का समय है। **परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन के समय को स्पष्ट करती एक रिपोर्ट-**

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

यह सर्व विदित है संसार में जितने भी मनुष्य हैं सब परमात्मा की संतान हैं। भले ही इस सृष्टि रंगमंच पर अलग-अलग रूपों और वेशभूषा में हों। इसलिए हिंदु, मुस्लिम,सिक्ख, ईसाई सब आपस में भाई-भाई आज भी गाया जाता है। इसका गहरा भावार्थ है। चार युगों को मिलाकर एक काल चक्र होता है। उस काल चक्र में परमात्मा का एक महान कार्य होता है वह है पुरानी दुनिया को नई बनाना। मनुष्य को नर से नारायण और नारी को लक्ष्मी बनाना।

चारों युगों में एक बार होता है परमात्मा का अवतरण

चारो युगों में एक बार परमात्मा का अवतरण इस सृष्टि पर होता है। जब यह दुनिया पतित भ्रष्टाचारी बन जाती है। आसुरीयता का बोलबाला हो जाता है। ऐसे समय में परमात्मा को इस सृष्टि पर आकर पुन: नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य करना पड़ता है। परंतु दुनिया भौतिकता की चकाचौंध में इतनी डूब जाती है कि उसके ज्ञान नेत्र बंद हो जाने के कारण सत्य और असत्य का कुछ पता ही नहीं चलता है। तब परमात्मा आकर अपने बच्चों को स्वयं की एवं परमात्मा की पहचान बताते हैं। उनके असली गुणों और कर्त्तव्यों की याद दिलाते हैं। इस तरह आत्मा और परमात्मा का यहां मिलन होता है।

परमात्मा का अवतरण अलौकिक और दिव्य

परमात्मा का अवतरण अलौकिक और दिव्य होता है। इसे देखने एवं पहचानने के लिए उसी रूप में आना पड़ता है। परमात्मा इसकी विधि भी बताते हैं ताकि कोई भी रूकावट और अड़चन पैदा न हो सके। परमात्मा नाना प्रकार के कर्म करते हैं। एक ही तीर से कई निशाने साधते हुए परमात्मा ने जहां एक ओर भक्तों को भगवान से मिलने की आस पूरी करते हैं। वहीं आसुरी प्रवृत्तियों का भी नाश करते हैं।

परमात्मा अपने विविध रूपों द्वारा प्रत्येक बच्चों के पास संदेश भेजते हैं और उन्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर परमात्मा से मिलन मनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। परंतु बहुत से लोगों को यह यकीन नहीं होता। फिर परमात्मा को अपना परिचय स्वयं देना पड़ता है। यही से शुरू होता है परमात्मा और आत्मा के मिलन का अद्भुत खेल। ऐसे हालात में यह जानना जरूरी होता है आखिर परमात्मा कौन हैं, कैसा स्वरूप है, कहां मिलेंगे, कैसे उनसे संवाद होगा, कहां रहते हैं। हम आत्माओं का असली घर कहा है। यह सारी बातों का ज्ञान होना जरूरी है। तो आइये जानते है परमात्मा कौन है, कहां रहता है, कैसा स्वरूप है और किस घर में रहता है। आदि सवालों के उत्तर क्या होगा इसी पर आधारित है हमारा ये स्पेशल अंक।

आखिर कौन हैं परमात्मा

भारत देश में 33 करोड़ देवी-देवताओं की महिमा गाई हुई है। परंतु इन सभी देवों के भी रचनाकार स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। जिनकी अनेक धर्मों, अनेक रूपों में भले ही पूजा की जाती हैं, परंतु उसका केंद्र बिंदु परमात्मा शिव के पास ही जाकर समाप्त होता है। परमात्मा शिव देवों के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति हैं। वे ब्रह्मा द्वारा नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना कराते हैं, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा इस आसुरी, तमोगुणी और विकारी सृष्टि का विनाश कराते हैं। परमात्मा तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी हैं। वे ही विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं, उनका जन्म नहीं होता बल्कि परकाया प्रवेश होता है। परमपिता शिव अभोक्ता हैं, ज्ञान के सागर हैं, आनंद के सागर हैं, प्रेम के सागर, सुख के सागर हैं, पवित्रता के सागर हैं, आनंद के सागर हैं, सुख के सागर हैं, शांति के दाता हैं। उनका स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है।

शिवरात्रि परमात्मा शिव का जन्मोत्सव

परमात्मा शिव ज्ञान के सागर, शांति के सागर, आनंद के सागर, प्रेम के सागर हैं। जो कलियुग के अंत में मनुष्यात्माओं को माया के बंधनों से छुड़ाकर मुक्त करते हैं। शिवरात्रि का त्योहार हम सभी आत्माओं के परमपिता का जन्मोत्सव है। जिसे सभी देशों में धूमधाम से मनाया जाना चाहिए। अब सभी मनुष्यों को चाहिए वह विकारों रूपी विष से नाता तोड़कर परमपिता परमात्मा शिव से अपना नाता जोड़े।

राजयोगिनी दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू, राजस्थान

नैतिक मूल्यों को लेकर अच्छा कार्य कर रही संस्था

भारत का पाश्चात्यीकरण किए बिना, उसे आधुनिक बनाने की आवश्यकता है। देश का निर्माण करने के लिए प्रतिभाओं का विकास करने की जरूरत है। यदि हम एक अच्छी शिक्षा व्यवस्था चाहते हैं तो हमें अच्छे शिक्षक बनाने होंगे। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था नैतिक मूल्यों को लेकर अच्छा कार्य कर रही है। यहां की शिक्षा से कई लोगों का जीवन बदला है। मेरी शुभकामना है यह अपने लक्ष्य में सफल हो।

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

मुझे यहां डिवाइन लाइट की अनुभूति हुई

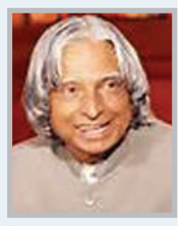

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था विश्वभर में समाज कल्याण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही है। जब मैं संस्था में पहली बार आया तो मुझे डिवाइन लाइट की अनुभूति हुई। इससे मुझे बहुत ही खुशी का अनुभव हुआ। यहां आते ही मुझे महान और दिव्य वातावरण का अनुभव हुआ। यहां से विश्व परिवर्तन का कार्य चल रहा है।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति, भारत सरकार

विश्व एक परिवार है, विचार धारा लेकर चल रही संस्था

पूरा विश्व एक परिवार है। इस विचार धारा को लेकर यह संस्था चल रही है जो हमारे लिए गौरव की बात है। परमात्मा के सब हैं, यही सत्य है। इसके अलावा कोई और अस्तित्व नहीं है। सभी लोगों को परमात्मा का ज्ञान लेकर अपने जीवन को सुखी बनाना चाहिए। शिव बाबा सचमुच एक नया समाज बना रहे हैं।

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश शासन

ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं परमात्मा शिव

परमपिता परमात्मा शिव निराकार हैं। निराकार का अर्थ यह नहीं उनका कोई आकार नहीं है, परंतु उनका कोई शारीरिक आकार नहीं होता, वह सूक्ष्म ज्योतिर्मय हैं। उनका स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है। वे रूप में बिंदी हैं लेकिन गुणों में सिंधु के समान हैं। उनके जैसा न कोई था, न कोई रहेगा। वे सदा शिव हैं, अकर्ता, अजन्मा, अभोक्ता हैं। उनका तेज अरबों सूर्य के समान है। वे चाहे तो एक सेकंड में पृथ्वी का विनाश कर सकते हैं। जैसे हम अपनी आत्मा को इन स्थूल नेत्रों से नहीं देख सकते, वैसे ही परमात्मा को भी नहीं देखा जा सकता। उनके साथ की, उनकी शक्तियों की तो अनुभूति की जा सकती है। तमाम ग्रंथों में परमात्मा के बारे में स्पष्ट लिखा है- मेरा कोई शरीर नहीं होता मैं परकाया प्रवेश कर अपना कार्य कराता हूं।

परमात्मा का स्मरण चिह्न शिवलिंग

शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिह्न। अत: शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परपपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है। चाहे वे पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की स्थायी रूप में मूर्तियां स्थापित न भी करें, लेकिन फिर भी पूजा-पाठ, प्रार्थना अथवा अन्य पवित्र अवसरों पर ज्योति स्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृति में मंदिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते हैं। भारत में विश्व के 12 प्रसिद्ध मठों को भी ज्योतिर्लिंग मठ कहा जाता है। इनमें हिमालय स्थित केदारेश्वर, काशी में विश्वनाथ, सौराष्ट्र प्रदेश में सोमनाथ और मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में महाकालेश्वर अति प्रसिद्ध हैं।

परमधाम के निवासी हैं परमपिता परमात्मा 'शिव'

स्थूल लोक

मनुष्य सृष्टि या स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते हैं यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी पांचों तत्वों से बनी है। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं, क्योंकि यहां मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल भोगता है। इस लोक में ही जन्ममरण है। इस सृष्टि को विराट नाटक शाला या लीलाधाम भी कहा जाता है। इसमें संकल्प, वचन और कर्म तीनों हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र है। स्थापना, विनाश और पालना आदि परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य इसी लोक से संबंधित हैं। सृष्टि की हर 5000 वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है और आत्माएं नियत समय पर अपना पार्ट बजाने आती

सूक्ष्म लोक

सूर्य-चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है। इसमें पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णुपुरी और उसके भी पार महादेव शंकर पुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं, क्योंकि इनके शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र की तरह पांच तत्वों से बने हुए नहीं हैं। दिव्य चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प और गति तो है, लेकिन वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। इसमें मृत्यु, दु:ख या विकारों का नाम निशान नहीं होता। धर्मराजपुरी भी इसी सूक्ष्मलोक में है।

परमधाम (शांतिधाम, ब्रह्मलोक)

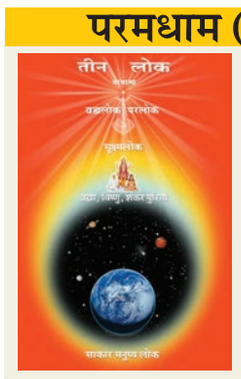

सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है इसे अखंड ज्योति ब्रह्मतत्व कहते हैं। यह तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य चक्षु द्वारा ही हो सकता है। गीता के 15वें अध्याय के छठें श्लोक में लिखा है ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्माएं अव्यक्त रूप में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। यहां न संकल्प है, न कर्म है अत: न सुख है, न दु:ख है, बल्कि एक न्यारी अवस्था है।

सभी शास्त्रों में लिखा: परमात्मा का होता है अवतरण

वेदों-पुराणों में भी शिव अवतरण की बात कही गई है। चाहे गीता हो, शिवपुराण, महाभारत, मनुस्मृति सभी में परमात्मा शिव के अवतरण की बात स्पष्ट लिखी हुई है। शिव पुराण में लिखा है 'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा'। महाभारत में परमात्मा की व्याख्या एक अण्डाकार ज्योति के रूप में की गई है, जो प्रकट हुई और नए युग की स्थापना के निमित्त बनी। मनुस्मृति में भी परमात्मा की व्याख्या हजारों सूर्य के समान तेजस्वी रूप में की गई है।

शिव ने ब्रह्मा के मुख से रची सृष्टि

शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है **'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा'।**

शिव पुराण

अर्थात् समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रूद्र हुआ। परमात्मा शिव ने ही ब्रह्मा के मुख द्वारा नई सृष्टि रची। जब ब्रह्मा द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ, तब शिव ने ब्रह्मा की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा नई सृष्टि रचने का कार्य प्रारंभ किया। शिव पुराण में यह उल्लेख अनेक बार आया है। साथ ही स्पष्ट लिखा है सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाले परमात्मा का चिह्न शिवलिंग ही है। सृष्टि के विनाशकाल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंगम् प्रगट हुआ, जो न घटता था, न बढ़ता था। वह अनुपम, अव्यक्त था। उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ। अर्थात् परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दु:ख से भरे एवं तमोगुणी हो चुके संसार का कल्याण किया।

ज्योति ने की नए युग की स्थापना

महाभारत के शांतिपर्व श्लोक संख्या - 337-24-25 में भी लिखा है 'भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया'। साथ ही लिखा है सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई।

महाभारत

वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया और इस सृष्टि का कल्याण किया। इसका भाव यही है जब इस सृष्टि पर विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार), बुराइयों, पाप और धर्मग्लानि की अति हो जाती है तो परमात्मा ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर उनके मुख से ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं।

मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है

गीता में भी स्पष्ट लिखा है 'मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं प्रकृति को वश में करके इस लोक में धर्म की स्थापना करने और प्राय: लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूं'। परमात्मा शिव ने पहले यह ज्ञान विवस्वान को दिया। ब्रह्मा को ही आदिदेव और शिव को स्वयंभू या आदिनाथ कहा गया है। आद्य शंकराचार्य ने भी अपने भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए कहा है भगवान ने नई सृष्टि रचने के समय यह ज्ञान दिया था और योग सिखाया था। इससे स्पष्ट होता है परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा ही यह ज्ञान दिया।

गीता

अवजानन्ति माँ मूढ़ा मानुषी तनुमाश्रितम्, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।

परमात्मा ने गीता के नौवें अध्याय 11वें श्लोक में कहा है मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी व्यक्त भाव वाले वे लोग मुझे नहीं पहचान सकते।

ज्योतिर्लिंगम् ने की सृष्टि की रचना

यजुर्वेद के 33/2 श्लोक - सवनिमेषा जज्ञिरे विद्यतु: पुरुषादधि। नैनमूर्ध्वम् न तिर्यच न मध्ये परिजग्रमात्।। में लिखा है सृष्टि रचने के लिए ज्योतिर्लिंगम् प्रगट हुआ। मनुस्मृति में लिखा है सृष्टि के आरंभ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। तंत्रलोक में लिंग शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है- ल से लय अर्थात् विनाश और ग से गमन अर्थात् नई रचना का बोध होता है। शिव ये दोनों कार्य कराने वाले हैं, इसलिए उन्हें ज्योतिर्लिंगम कहा गया है। उनका स्मरण-चिह्न मण्डलाकार है। सौर पुराण में भी लिखा है मण्डलाकार शिवलिंग के रूप में परमात्मा को स्मरण करें। शिवोपनिषद में लिखा है शिवलिंग का निम्नभाग, मध्यभाग और ऊपर का भाग क्रमश: ब्रह्मा, विष्णु और शंकर का प्रतीक है।

यजुर्वेद

सभी धर्मों ने स्वीकारी शिव की सत्ता: विश्व के सभी देशों में हैं परमात्मा के यादगार

सभी देवों के भी देव हैं महादेव

कोई भी इंसान या देवता किसी की पूजा तभी करता है जब वह उससे गुणों और विशेषताओं में श्रेष्ठ और बड़ा होता है। उससे शक्तियां लेनी हो, वह आराध्य हो। परमपिता शिव परमात्मा सभी देवों के भी देव महादेव हैं उनकी पूजा और आराधना किसी न किसी रूप में देवी-देवताओं ने की है। सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा शिव सभी देवों के भी देव हैं। विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में उनकी पूजा या आराधना की जाती है। हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, पारसी, यहूदी, जैन सभी धर्मों ने परमात्मा की सत्ता को स्वीकारा है। किसी ने उसे निराकार ज्योति कहा, किसी ने नूर, तेज, तेजोमय, एक ओंकार निराकार, ज्योति, लाइट आदि नामों से पुकारा। किसी भी धर्म स्थापक ने ये कही नहीं कहा कि मैं ही ईश्वर हूं। सभी ने ऊपर की ओर इशारा किया।

श्रीराम ने की 'शिव' की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। शिव श्री राम के भी भगवान हैं। प्रश्न उठता है यदि श्रीराम भगवान होते तो उन्हें पूजा करने की क्या आवश्यकता थी? क्योंकि वह जानते थे रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या, आराधना करके प्राप्त की थी। शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए श्रीराम को भी उनकी शक्ति की आवश्यकता पड़ी, इसलिए उन्होंने शिव की आराधना की।

श्रीकृष्ण ने भी की शिव की पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर परमपिता शिव की पूजा-अर्चना की और पांडवों से भी करवाई। वह शिव से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। यह शिव की शक्ति का ही परिणाम था वह संख्या में कम होने के बाद भी कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

शंकर भी लगाते शिव का ध्यान

शंकर को सदा ध्यान की अवस्था में दिखाया जाता है। इससे स्पष्ट है उनके भी कोई आराध्य हैं? जिनका वे निरंतर एकाग्रचित्त होकर स्मरण करते हैं। उनके संबंध में कहा जाता है तीसरा नेत्र खुलते ही विनाश ज्वाला प्रकट होती है। यह तपस्या द्वारा परमात्मा से प्राप्त शक्ति का परिणाम है यह शक्ति उनके नेत्रों से दिखाई देती है। इससे स्पष्ट है परमात्मा शिव ही सभी देवों के देव महादेव हैं।

परमात्मा सर्व आत्माओं के परमपिता हैं, जिन्हें कोई ईश्वर, कोई अल्लाह तो कोई गॉड कहता है। जहां हिन्दू धर्म में निराकार परमात्मा को ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजा जाता है वहीं अन्य धर्मों में भी परमात्मा को निराकार ज्योति स्वरूप माना जाता है।

अग्यारी में ज्योति स्थापन...

पारसियों के अग्यारी में होली फायर मिलता है। पारसी जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर आए थे। आज भी जब नई अग्यारी की स्थापना होती है तो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा स्थापित किया जाता है, जो सदा जलती आई थी, जो सदा अखंड है, जो परमात्मा का दिव्य स्वरूप है।

मिस्र में भी शिव की यादगार

मिस्र में शिव की पूजा सेवा नाम से होती थी। फैजी देश में शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' नाम से पूजते हैं। शिवलिंग के साथ बैल की मूर्ति भी रखी जाती है। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहा जाता है। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के पति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित रहती थी, इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

यूनान में भी शिव की पूजा..

यूनान में शिवलिंग को 'फल्लुस' कहा जाता है। शिवलिंग की पूजा उनके धर्म का प्रधान अंग थी। शिवलिंग के पास ही वे बैल की मूर्ति स्थापित किया करते थे, जिसे सभी देशों में धर्म का सूचक माना जाता रहा है। स्याम थाइलैंड में भी एकोनिस और ऐस्टररिग्स एवं यहूदियों के यहां शिवलिंग को बेलफेगो कहते हैं। ये लोग शिवलिंग की स्थापना करके बाल नाम से पूजते हैं। भारत में भी शिवलिंग के अनेक मंदिर बालेश्वर नाम से हैं। ये शिवलिंग को सत्य स्वरूप परमात्मा की प्रतिमा मानने के कारण उसके सामने नेम अथवा शपथ लेते थे।

चिंकोनसेंकी..

जापान में तीन फीट ऊंचाई और तीन फीट की दूरी पर एक थाली में लाल पत्थर रख कर ध्यान करते हैं, जो शिकोनिजम सेक्ट वाले हैं वो इस पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। इसे चिंकोनसेंकी कहा जाता है। इसका अर्थ होता है शांति का दाता। उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं।

चीन में भी शिवलिंग की पूजा...

चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से पूजा होती थी। फ्रांस में गिरजाघरों और अजायबघरों में लिंग रूप के पत्थर आज भी स्मारक रूप में देखे जाते हैं। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। इससे स्पष्ट होता है विश्व के हर देश में किसी न किसी नाम से शिव की ही पूजा की जाती है।

परमात्मा ज्योतिस्वरूप: स्वामी विवेकानंद

स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी शिव और काली की पूजा करते थे। स्वामी विवेकानंद ने भी अपने शिव स्त्रोत में शिव की वंदना इन शब्दों में की है - सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालन करने वाले हैं, जो अपरंपार महिमा वाले हैं। उन पारलौकिक परमात्मा को मेरे जीवन की श्रद्धा-ज्योति समर्पित है। परमात्मा शिव निराशा और अंधकार से सदा परे, ज्योतिस्वरूप हैं, उन्हें अखण्ड प्रभु-स्मृति द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है और वे ही कलियुगी, विकारी सृष्टि के विकार मिटाने वाले प्रभु हैं। उन्हें मेरा प्रणाम है। वे ही मुझ आत्मा की मार्गप्रदर्शना और रक्षा करें।

अल्लाह को कहा 'नूर' खुदा

मुस्लिम धर्म में मान्यता है जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा एवं पवित्र पत्थर का दर्शन अवश्य करना चाहिए। इससे खुदा उन्हें जन्नत में स्थान देता है। उस पत्थर की कोई साकार आकृति नहीं है अर्थात् वो निराकार है। जिसे संग-ए-असवद कहा जाता है अर्थात् उसे ही अल्लाह, नूर-ए-इलाही, खुदा कहते हैं। उस तेजोमय स्वरूप को जिसे हिन्दू धर्म में ज्योतिर्लिंगम कहा गया, जो ज्योति का प्रतीक है, ज्योति माना ही तेज। मुसलमानों ने भी अल्लाह, नूर-ए-इलाही कहकर उस निराकार, परम सत्ता को ही याद किया।

एक ओंकार निराकार:गुरुनानक

सिक्ख धर्म में गुरुनानक देव ने कहा है 'एक ओंकार निराकार'। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम् है जिसको काल कभी नहीं खा सकता यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्यनाम कहा। बात तो एक की ही है। गुरुनानक की तस्वीर में उनकी एक ऊंगली हमेशा ऊपर की ओर दिखाई देती है जो परमसत्ता की ओर ही इशारा करती है।

गॉड इज लाइट: जीसस

जीसस ने भी गॉड को लाइट कहा है। गॉड इज लाइट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। जीसस ने यह कभी नहीं कहा- आई एम गॉड। उन्होंने भी उस लाइट को परमात्मा का स्वरूप बताया। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया है जब हजरत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसे देखते ही हजरत मूसा ने कहा- जेहोवा।

यहां स्पष्ट रूप से आत्मा के ज्ञान की व्याख्या की जाती है

संस्था में आत्मा की पवित्रता एवं सरलता को सहजता से निर्माण किया जाता है। यहां दिए जा रहे आत्मा के ज्ञान को जीवन में धारण कर हम अपना स्वरूप भी परमात्मा जैसा बना सकते हैं। यहां स्पष्ट रूप से आत्मा के ज्ञान की व्याख्या की जाती है। आज समाज के लिए यह ज्ञान बहुत ही जरूरी है। यहां नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जा रही है।

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, अध्यक्ष, विश्व कल्याण परिषद, दिल्ली

कौमी एकता की बुनियाद को मजबूत कर रही संस्था

ब्रह्माकुमारी संस्था ने हिन्दुस्तान और कौमी एकता की बुनियाद को मजबूत करने का काम किया है। यह वास्तव में काबिले तारीफ है। शांति और पवित्रता का संदेश ये माताएं दे रही है। यह संदेश पूरे विश्व में फैलता जा रहा है। संस्था आत्मा को परमात्मा से मिलाने का कार्य कर रही है। शांति और सद्भावना सबसे बड़ा संदेश है।

हाजी झुमा राईमा, गांधीधाम मस्जिद

यहां ईश्वरीय शक्ति के सान्निध्य में कार्य हो रहा

सही मायनों में यह संस्था संस्कार परिवर्तन का कार्य कर ही है। यहां आने के बाद खुद का एहसास होने लगता है। यदि परमात्मा के सान्निध्य में मनुष्य चला जाए तो उसका जीवन निर्विघ्न, सहज और श्रेष्ठ बन जाता है। यहां ईश्वरीय शक्ति के सान्निध्य में काम हो रहा है। यहां दिया जा रहा ज्ञान प्रत्येक रीति से स्पष्ट है।

करुणाकरन भंते, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बौद्ध गया महाबोधि बिहार, ऑल इंडिया कमेटी

परमात्मा ने संस्था को बनाया

दुनिया में भर में धार्मिक भावनाओं के उन्माद में उलझन को सुलझाने का संस्था का प्रयास सराहनीय है। विश्व परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। कई माध्यम भले ही परमात्मा का ज्ञान दे रहे है परन्तु सभी को परमात्मा से जोड़कर मिलाने वाली यह संस्था है। परमात्मा का अवतरण होता है यहा मैंने अनुभव किया है।

रसिक पीठाधीश्वर महंत जन्मजेयशरण, अध्यक्ष श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, अयोध्या

यहां परमात्म शक्ति काम कर रही

जब मैं माउण्ट आबू पहुंचा तो यहां के रूहानी वातावरण और भाई-बहनों के नि:स्वार्थ स्नेह ने मुझे आकर्षित कर लिया। तभी हमारे दिल से यह आवाज आई सचमुच यह परमात्मा का ही घर है। जैसे ही बाबा की दृष्टि मुझ पर पड़ी तो मुझे जीवन को बदलने की प्रेरणा मिली। मेरे जीवन में जो प्राप्ति हुई है उसके आधार पर मैं निश्चय से कह सकता हूं यहां परमात्मा की शक्ति कार्य कर रही है।

सुबोध राम, डिप्टी कमिश्नर, सेल टैक्स, बिहार

योग से हुआ परमात्मा से मिलन

भगवान को प्राप्त करने की अटूट इच्छा से मंदिरों में बहुत भक्ति की लेकिन कहीं संतुष्टि नहीं हुई। ब्रह्माकुमारीज में सात दिन के कोर्स के दौरान तीसरे दिन योग करते वक्त मुझे आउट ऑफ बॉडी का अनुभव हुआ। कुछ पल तो समझ में नहीं आया यह क्या हुआ। बाद में दीदी से बात करने पर पता लगा यह परमात्म मिलन का श्रेष्ठ अनुभव है। इसके बाद योग के अभ्यास में ऐसी अनुभूति कई बार हुई। सचमुच परमात्मा का मिलन होता है।

व्ही.के. मिश्रा, पूर्व महाप्रबंधक, एलजाबर ग्रुप ऑफ कंपनीज, दुबई

गुरु गोविंद सिंह की चौपाई में लिखा: देवों के देव शिव हैं

गुरुग्रंथ साहेब में हमेशा पढ़ा था एक ओंकार, सतनाम, कर्तापूरक, निर्भय निर्वैर, अकाल मूरत, आजूनी साहेब गुरुप्रसाद.. सिर्फ रटी रटाई लाइनें पढ़ते थे, लेकिन इनका अर्थ समझ में आता था। ब्रह्माकुमारीज से मिले ज्ञान के के बाद समझ आया भगवान कैसे सत्यम् शिवम् सुंदरम् है और पारब्रह्म है। गुरुगोविंद सिंह की चौपाई साहेब में भी लिखा है देवों के देव महादेव शंकर नहीं शिव हैं।

सुरजीत सिंह, पूर्व क्षेत्रीय प्रबंधक, पंजाब एंड सिंध बैंक,लखनऊ

हर बात परमात्मा को बताता हूं

ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से मुझे पता चला हम सभी आत्माएं परम सत्य एक परमात्मा की संतान हैं। हम उनकी बताई हुई श्रीमत पर चलेंगे तो वह हमेशा हमारे आसपास होंगे और हमारी मदद करेंगे। यह कथन तो सिर्फ भगवान का ही हो सकता है- बच्चों तुम श्रीमत का एक कदम आगे बढ़ाओ, मैं मदद के हजार कदम आगे बढ़ाऊंगा। उनसे आज भी मिलन मनाता हूं और अपनी हर बात बताता हूं।

रवींद्र अग्रवाल, चेयरमैन, टेक्नो ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

शिव के साथ क्यों जुड़ी रात्रि

अन्य देवताओं के जन्म दिवस क्यों

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती ही ऐसी है जिसे जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है। इसका अर्थ है परमात्मा शिव जन्ममरण से न्यारे अथवा अयोनि हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह लौकिक या शारीरिक जन्म नहीं होता है।

कल्याणकारी विश्व पिता शिव तो अलौकिक अथवा दिव्य जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती संज्ञा वाचक नहीं, बल्कि कर्त्तव्य वाचक रूप से मनाई जाती है। परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण विषय-विकारों की कालिमा से लिप्त अज्ञान निद्रा में सोए मनुष्य को जगाने के लिए होता है। शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले मनाई जाती है। जब-जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि और पूरी दुनिया दु:खों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदें अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं। और पुन: सत्धर्म की स्थापना, सच्चा गीता ज्ञान एवं मनुष्यात्माओं को पतित से पापन बनाने के लिए सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं।

शिवलिंग पर तीन रेखाएं ही क्यों

शिवलिंग पर सदा तीन रेखाएं अंकित की जाती हैं। इसके बीच में एक आंख भी दिखाई जाती है। साथ ही तीन पत्तों वाला बेलपत्र भी चढ़ाया जाता है। तीन रेखाएं शिव के तीनों लोकों का स्वामी होने का प्रतीक है। रेखाओं के बीच में एक आंख का होना, उन्हें त्रिनेत्री होने का प्रतीक है। तीन पत्तों वाला बेलपत्र भी परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता होने का प्रतीक है। उन्हें करन-करावनहार कहा जाता है। वे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। जब परमात्मा का अवतरण होता है इसके साथ ही इन तीन देवताओं का कार्य भी सूक्ष्मलोक में आरंभ हो जाता है।

आज मेरा सपना सच हो गया

माउण्ट आबू आने पर हमारा संबंध स्वत: ही परमात्मा से जुड़ जाता है। परमात्मा के अवतरण के समय यहां का वातावरण पूरा तरह चैंज हो जाता है। जब दादी के तन में अवतरित परमात्मा एक-एक व्यक्ति से संवाद करते हैं तो हमारा मन खुशियों से भर जाता है। मैं सोचता था भगवान से बातें करूं, आज मेरा यह सपना सच हो गया। अब दिन की शुरुआत परमात्मा को गुडमार्निंग के साथ होती है।

अनिल खंडेलवाल, डायरेक्टर, फाइनेंस एंड स्ट्रेडीज एलटी फूड लि., गुड़गांव

ऐसा नि:स्वार्थ प्यार और कहीं नहीं

इस कलियुग के समय में हर रिश्ते में स्वार्थ है, लेकिन परमात्मा के साथ बनाए गए रिश्तों में कहीं भी स्वार्थ का अनुभव नहीं होता बल्कि अतिइन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है। भगवान के साथ हर रिश्ते का अनुभव कर सकते हैं, उन्हें हमेशा अपने साथ अनुभव कर सकते हैं, हर कार्य में उनकी मदद ले सकते हैं। सच है न कोई शिव के पूर्व था, न कोई शिव के बाद है।

डॉ. मनीष तुलसियानी, प्रबंध निदेशक, एक्डा क्लासेज प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

अल्लाह, खुदा, गॉड और भगवान वास्तव में एक ही है

अल्लाह, खुदा, गॉड और भगवान वास्तव में एक ही है। वह निराकार ज्योति है। पवित्र कुरान में एक लाख पैगम्बरों का वर्णन है, जिन्होंने समय-समय पर इस धरा पर अवतरित होकर मानव जाति को यह शिक्षा दी है परमात्मा एक है और वह ज्योर्तिबिंदु स्वरूप है। ब्रह्माकुमारीज़ बहुत ही सरल ढंग से पूरे विश्व को यह शिक्षा दे रही है कि कैसे परमात्मा से अपना सीधा संबंध जोड़े और उसकी इबादत करें। जिससे मन को शांति व सुकून की अनुभूति हो। मेडिटेशन से निश्चित ही लाभ होता है। संस्था का यह कार्य सराहनीय है।

शाहबाज खान, प्रसिद्ध फिल्म कलाकार

इस ज्ञान से मेरी जिंदगी बदल गई, परमात्मा का सत्य ज्ञान मिला

फिल्मों की दुनिया की जिंदगी बिल्कुल अलग होती है, लेकिन आत्मा की सच्ची प्यास अधूरी रहती है। टीवी में ब्रह्माकुमारीज़ का कार्यक्रम देखा तो लगा इसमें कुछ सच्चाई जरूर है। जब संस्था के संपर्क में आया तो धीरे-धीरे तस्वीर साफ होने लगी और आज हम एक अच्छी जिंदगी जी रहे हैं। यह सत्य है परमपिता परमात्मा शिव का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। वे सहज राजयोग की शिक्षा देकर हम आत्माओं को पावन बना रहे हैं। इस मिलन के साक्षी लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहनें है जिन्होंने साक्षात् भगवान से मिलन मनाया है।

सुरेश ओबेराय, फिल्म अभिनेता, मुंबई

शिवरात्रि महापर्व परमात्मा के अवतरण का ही पर्व है

शांति और पवित्रतता की आबोहवा हमेशा ही दिल को छूती है। यह आत्मा का निजी गुण है। परमात्मा से मिलने के बाद एकाग्रता बढ़ जाती है और आन्तरिक सशक्तिकरण होने लगता है। परमात्मा से मिलन और उनसे संवाद बिल्कुल एक व्यक्ति की तरह होता है। कोई भी समस्या, कोई भी बातें सहज ही हल हो जाती हैं। जब हम परमात्मा से मिलते हैं तो उस समय सिर्फ हमारे और ईश्वर के साथ ही संवाद होता है। शिवरात्रि महापर्व परमात्मा के अवतरण का ही पर्व है।

राकेश मेहता (आईएएस), राज्य निर्वाचन आयुक्त दिल्ली एवं चण्डीगढ़ एवं पूर्व मुख्य सचिव, दिल्ली सरकार

यह सच है परमात्मा अवतरित होकर नई दुनिया बना रहे हैं

मेरा सौभाग्य है मुझे माउण्ट आबू में आने का अवसर मिलता है। परमात्मा से मिलना मेरे लिए बड़ी बात है। इतनी बड़ी संख्या में लोग होने के बाद भी हर एक से परमात्मा का संवाद होता है। हर एक समझता है परमात्मा मेरे से बात कर रहा है। परमात्मा की दृष्टि मिलते ही शरीर का प्रत्येक अंग रोमांचित हो जाता है और उसके स्नेह का लेप लग जाता है। यह सच है परमात्मा अवतरित होकर अपने बच्चों के लिए नई दुनिया की स्थापना कर रहा है। आप भी परमात्मा से मिलना चाहते है तो यह सुनहरा अवसर है।

रमेश माने, एक्यूप्रेसरिस्ट-मैस्योर, भारतीय क्रिकेट टीम

परमात्मा के निर्देश में यह दुनिया जरूर बदलेगी

हम आत्माओं के पिता परमात्मा शिव बाबा इस धरा पर आ चुके हैं और नई दुनिया की स्थापना का अपना दिव्य कार्य कर रहे हैं। परमात्मा से मिलन की तो अनुभूति की जा सकती है जो आज लाखों लोग इस मिलन के साक्षी हैं। शिव बाबा जो ज्ञान दे रहे हैं, उससे लोगों के जीवन में जो बदलाव आ रहा है वह आश्चर्य जनक है। तभी आज पूरे विश्व में हर प्रकार के लोग और अनेक सोच वाले लोग भी इस अभियान का हिस्सा है। परमात्मा के निर्देशन में जरूर यह दुनिया बदलेगी और लोग खुश होंगे।

ब्रह्माकुमारी शिवानी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, गुड़गांव

लाखों लोग बन चुके इस मिलन के साक्षी

हां, परमात्मा का मिलन हो रहा

बड़ा अजीब एवं बहुप्रतीक्षित प्रश्न है। परंतु इसका उत्तर यदि किसी को भी हां में मिले तो शायद दुनिया में उससे खुशनसीब कोई नहीं होगा। इसके लिए सदियों से ही लोगों की आशा एवं उम्मीदें हैं। अब आप भी चाहे तो यह उम्मीदें पूरा हो सकती हैं। यह केवल मैं नहीं बल्कि उन लोगों से आप सुनेंगे जो इसकी अनुभूति कर रहे हैं। परमात्मा ने साफतौर पर कहा है जब-जब इस धरती पर अधर्म होगा, तब मैं आऊंगा और जब भी आऊंगा तो करोड़ों में कोई ही मुझे पहचानेगा। यह वही वक्त है। अब अपने तीसरे नेत्र को खोलिए और परमात्मा शिव से मिलन मनाइए। एक सतधर्म की स्थापना और रावण राज्य को समाप्त करने के लिए स्वयं परमपिता परमात्मा शिव इस दुनिया में अपने बच्चों से मिल रहे हैं। साथ ही नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। राजस्थान के माउण्ट आबू में यह मिलन आज भी हो रहा है। आइए सुनते हैं उन लोगों से जिन्होंने स्वयं परमात्मा को पाया है और उनसे प्रतिदिन मिलन मनाते हैं।

वर्तमान युग में हो रहा परमात्मा का गुप्त मिलन

वैसे तो वर्तमान समय शास्त्रों, पंडितों एवं ग्रंथों के अनुसार यह कलियुग है। कलियुग का अर्थ ही है कलह का युग, कल कारखानों का युग, जहां सभी अपनी स्थिति में लौह मापदंड पर होती हैं। परंतु परमात्मा के अनुसार यह कलियुग के अंत एवं सतयुग के आदि का संगमयुग है। संगमयुग पर जहां दो युगों का मिलन हो रहा है। वहीं आत्मा और परमात्मा का मिलन एक बहुत बड़ा संयोग है, यह सत्य है। परमात्मा का गुप्त मिलन मनुष्यात्माओं के साथ हो रहा है। इसका मतलब यह नहीं कि किसी गुफा और छिपे तौर पर हो रहा है। परमात्मा एक साधारण मानव के तन का आधार लेकर नई दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे हैं, जिन्हें तीसरे नेत्र के जरिए ही देखा जा सकता है। इसका वर्णन महाभारत में श्रीकृष्ण ने गीता में किया है। राजस्थान के माउण्ट आबू में परमात्मा द्वारा स्थापित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आत्मा और परमात्मा का मिलन हो रहा है और यहीं से नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य चल रहा है।

सुखदाता हैं परमात्मा

'शिव' अर्थात् कल्याणकारी, मंगलकारी, शुभकारी, पापनाशक और मुक्तिदाता। परमात्मा शिव तो दु:खहर्ता, सुखकर्ता हैं। 'शिव' परमपिता परमात्मा का ही कर्त्तव्यवाचक नाम है। मनुष्यों को थोड़ा दु:ख होता है तो वह भगवान को कोसते हैं कि हे भगवान हमें ही दु:खों का पहाड़ क्यों दे दिया? मैंने ऐसे क्या कर्म किए जो मुझे दु:ख दिया? यह मनुष्यों की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा कभी किसी को दु:ख नहीं देते हैं। वे तो दु:खों से छुड़ाने वाले, पतितों को पावन बनाने वाले हैं। मनुष्य को सुख-दु:ख तो अपने किए कर्मों के आधार पर ही मिलता है। मनुष्यात्मा इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर जो भी अच्छे-बुरे कर्म करती है उसी के फलस्वरूप वह सुख-दु:ख भोगती है।

हमारे प्रत्येक कर्म का मिलता है फल

ऐसा क्यों होता है कोई बच्चा राजमहल में पैदा होता है तो कोई सड़क पर। यह आत्मा द्वारा पूर्व जन्म में किए गए कर्मों का ही फल है। हम इस जन्म में जो भी कर्म करते हैं उसी अनुसार हमें अगले जन्म में शरीर, परिवार, संबंधी, घर और धन मिलता है। यहां तक कि हम मन में किसी के प्रति अच्छे या बुरे जो भी संकल्प करते हैं वह भी हमें कर्म के रूप में भुगतने पड़ते हैं। कर्म के सिद्धांत से कोई भी मनुष्य नहीं बच सकता है। कुछ कर्म ऐसे होते हैं जिनका फल हमें वर्तमान में ही मिल जाता है, जबकि कुछ कर्म ऐसे होते हैं जिनका फल हमें एक जन्म, दो जन्म या कई जन्मों के बाद तक मिलता रहता है। इन सभी कर्मों का हिसाब-किताब हमें मनुष्य योनि में ही चुकतू करना होता है, क्योंकि मनुष्यात्मा मनुष्य योनि में ही जन्म लेती है। यह गीता में स्पष्ट लिखा हुआ है।

शिव पर अक-धतूरा क्यों चढ़ाया जाता है?

देवी-देवताओं पर कमल, गुलाब और अन्य सुगंधित पुष्प चढ़ाते हैं, जबकि शिव पर अक्, धतूरा व गंधहीन पुष्प चढ़ाया जाता है। वास्तव में अक और धतूरा विकारों और बुराईयों का प्रतीक है। मनुष्य इस सृष्टि पर पाप, अत्याचार, विकारों, बुराईयों और पांच विकारों की अति से दु:खी होकर जब परमात्मा को पुकारते है तो वे इस धरा पर अवतरित होकर मानवमात्र को दु:खों से छुड़ाते हैं। परमात्मा मनुष्य से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और बुराईयों का दान मांगते हैं। जो नर-नारी इन पांच विकारों को परमात्मा शिव पर चढ़ा देते हैं, वे निर्विकारी बन पावन, सतयुगी दैवी स्वराज्य के अधिकारी बनते हैं। इसी की स्मृति में परमात्मा पर अक्, धतुरे का फूल चढ़ाया जाता है।

कवियों ने भी गाई शिव महिमा

संस्कृत के आदि कवि बाल्मीकि ने जहां राम और रावण को शिव के उपासक के रूप में वर्णित किया है। वहीं कालीदास ने मेघदूत और रघुवंश दोनों में महाकाल की स्तुति की है। भास, भवभूति, पद्म गुप्त ने भी अपनी कृतियों में परमात्मा शिव की महिमा गाई है। भारत के सर्वोच्च कवि कालिदास भी शिव के पुजारी थे।

शिवरात्रि का वास्तविक रहस्य

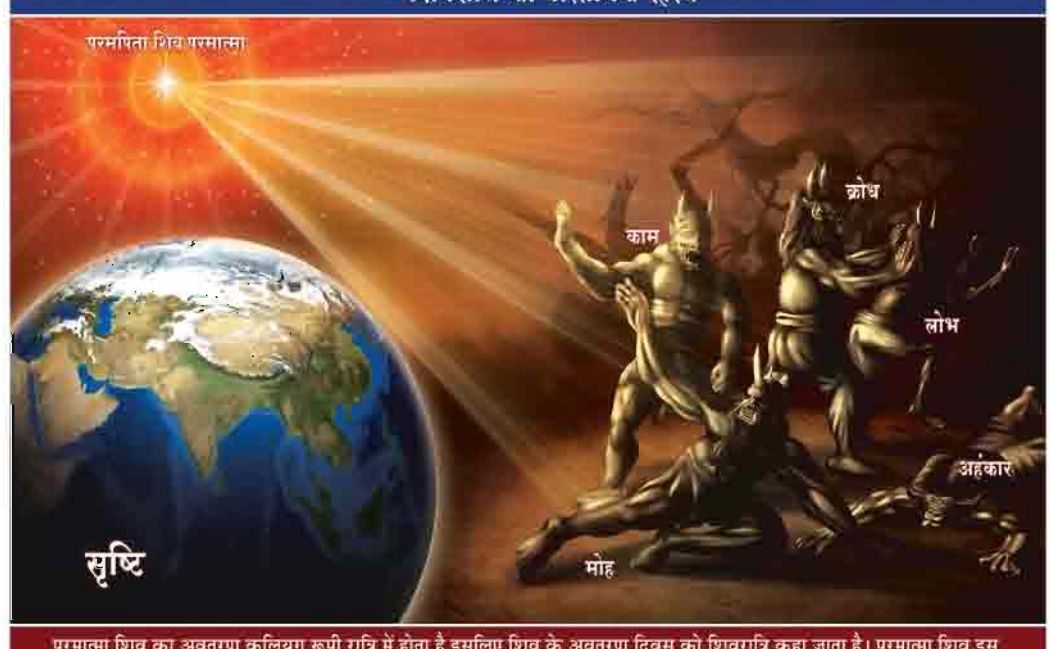

परमात्मा शिव का अवतरण कलियुग रूपी रात्रि में होता है इसलिए शिव के अवतरण दिवस को शिवरात्रि कहा जाता है। परमात्मा शिव इस धरती से पाँचों विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार) रूपी राक्षसों का खात्मा कर देते हैं जिससे धरती फिर से पावन हो जाती है।

एक नहीं हैं आत्मा और परमात्मा

परमात्मा शिव परमधाम के निवासी हैं। हम सब आत्माएं भी परमधाम की निवासी हैं। परमात्मा हम आत्माओं के पिता है। वे अजन्मा, अकर्ता, अभोक्ता हैं जबकि आत्माओं का जन्म होता है, वह शरीर के माध्यम से जो कर्म करती हैं उसका फल भी भोगती हैं। परमात्मा सर्व गुणों, शक्तियों, ज्ञान, प्रेम, पवित्रता के सागर हैं तो हम आत्माएं उसका स्वरूप हैं। परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं। आत्माओं का स्वरूप भी ज्योतिर्बिन्दु है।

33 करोड़ देवताओं के भी पिता हैं परमात्मा: देवों के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी, विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता हैं परमात्मा शिव। वे अजन्मा, अकर्ता, अभोक्ता, अविनाशी हैं। परमात्मा शिव परमधाम के निवासी हैं, जिसे हम शांतिधाम, निर्वाणधाम, बैकुण्ठ, ब्रह्मलोक कहते हैं।

परमात्मा को स्थूल आंखों से देखना संभव नहीं: परमात्मा शिव हजारों सूर्यों से भी तेजोमय हैं। उन्हें इन स्थूल आंखों से देखना संभव नहीं है। उनके साथ की तो अनुभूति की जा सकती है। वे तो पवित्रता के सागर हैं हम पवित्र बने बगैर उनसे अपना संबंध नहीं जोड़ सकते है। जब आत्मा पवित्रता का व्रत लेकर स्वयं को आत्मा समझ उस सर्वशक्तिमान, निराकार परमात्मा से ध्यान लगाती है तो उनके साथ की, उनकी शक्तियों की अनुभूति होने लगती है। पिछले 79 वर्षों से आत्मा-परमात्मा के महामिलन का मंगल मेला राजस्थान के माउण्ट आबू में हो रहा है। इसके साक्षी लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहनें हैं।

पुष्पे गंध दिले तैलं काष्ठे वह्निं पयो घृतम।
इक्षौ गुडं तथा देहे पश्याडत्मानं विवेकत: ।।

जिस प्रकार फूलों में खुशबू होती है, उसे देखा नहीं जा सकता है, सिर्फ महसूस किया जा सकता है। तिल से तेल निकालने के लिए मेहनत करनी पड़ती है, दूध को मथने पर ही घी प्राप्त होता है, सूखी लकड़ियों को रगड़ने पर उनसे आग प्रकट हो जाती है, ईख के रस से गुड़ बनाया जाता है। ठीक इसी प्रकार हमारे शरीर में आत्मा विद्यमान है। मनुष्य स्वयं की बुद्धि और विवेक का सहारा लेकर ही आत्मा और परमात्मा का अनुभव कर सकता है।

– आचार्य चाणक्य

दादी के तन में आते हैं भगवान

भगवान के अवरतण की कहानी वैज्ञानिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक किसी भी रूप में उनका प्रस्तुतिकरण को इंसान व्यक्त कर ही नहीं सकता। उनसे मिलने वाले वायब्रेशन परमात्मा की सभी शक्तियों का एहसास कराते हैं। बाबा जब दादी में आते है तो उनका स्टाइल, उनकी बोलचाल की भाषा और दिया जाने वाला ज्ञान सब कुछ ईश्वर का ही हो सकता है। कोई भी इंसान इस तरह का कार्य करा ही नहीं सकता। सभा में बैठे बीस हजार लोगों को एक साथ उनकी मनोवृत्ति को समझ कर पढ़ाना यह केवल ईश्वर ही कर सकता है।

डॉ. अवधेश शर्मा, प्रसिद्ध मनोचिकित्सक एवं पूर्व अध्यक्ष, इंडियन एसा. प्राइवेट मनोचिकित्सा संघ

सारे प्रश्नों का जवाब मिल गया

मैं 2013 में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था से जुड़ी थी। परमात्मा को ढूंढ़ने के लिए बहुत से मंदिरों के चक्कर लगाई, अनेक साधु-महात्माओं के शरण में भी गई। लेकिन कोई भी मुझे परमात्मा से नहीं मिला सका, लेकिन जब से इस संस्था से जुड़ी हूं मेरा प्रतिदिन परमात्मा पिता से मिलन होता है। परमात्मा ने पहली ही मुलाकात में मुझे इतना प्यार मिला मैं उस प्यार में ही खो गई। परमात्मा से मैंने सर्व संबंध जोड़ लिए। मैंने भगवान के साथ होली खेली। भगवान ने हमारे सारे प्रश्नों का जवाब मुरली के माध्यम से दे दिया। अब मैं मानसिक रूप से बहुत ही मजबूत हो गई हूं। भगवान इस धरा पर आ गया है।

ग्रेसी सिंह, फिल्म अभिनेत्री, मुंबई

स्वप्न में नहीं सोचा था भगवान मिलेंगे

स्वयं इस सृष्टि के रचनाकार परमपिता परमात्मा को पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया। मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था मुझे इस जन्म में भगवान मिल जाएंगे। परमात्मा की याद और साथ से प्रत्येक कार्य में सहज ही सफलता मिलती जाती है। परमात्मा शिव ने गीता में स्पष्ट शब्दों में कहा है जब-जब धर्म की ग्लानि होती है मैं इस धरा पर अवतरित होता हूं। प्रत्येक धर्म ग्रंथ में परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। क्योंकि परमात्मा पिता अजन्मा, अकर्ता हैं। परमात्मा से मिलन की अनुभूति शब्दों में बयां नहीं की जा सकती है।

ब्रह्माकुमारी संतोष बहन, जोन इंचार्ज, ब्रह्माकुमारीज़, महाराष्ट्र जोन, मुंबई

मैं तो निमित्त सेवाधारी हूं

परमात्मा के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अंग-संग रहने का सौभाग्य मिला। ब्रह्मा बाबा मनुष्य होते हुए भी उनके कर्म, बोल, रहन-सहन सब फरिश्तों जैसे थे। उनके सामने कितना भी क्रोधी व्यक्ति पहुंच जाए, बाबा की एक दृष्टि पड़ते ही वह शांत हो जाता था। बाबा के सामने आते ही शरीर का भान भूल जाते है और ऐसी सुखद और आनंदमय अनुभूति होती थी जो वर्णन हीं की जा सकती है। यह ज्ञान शास्त्रों और वैज्ञानिक प्रत्येक रीति से सत्य और स्पष्ट है, क्योंकि इससे हमें स्वयं के और परमात्मा के बारे में सत्य ज्ञान मिलता है।

ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश, निदेशक, इंदौर-छ.ग. जोन

शिव और शंकर को एक मानना, मानव की सबसे बड़ी भूल

समझें शिव और शंकर में भेद

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

शिव और शंकर में उतना ही अंतर है जितना एक पिता और पुत्र में होता है। सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं, जबकि शंकर आकारी शरीर वाले देवता हैं। परमात्मा शिव ब्रह्मा द्वारा नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा इस आसुरी कलियुगी सृष्टि का विनाश कराते हैं।

शिव का अर्थ होता है कल्याणकारी और शंकर का अर्थ होता है विनाशकारी। परमपिता परमात्मा जिन्हें निराकार व ज्योतिर्बिन्दु कहा जाता है का प्रतीक शिवलिंग है। साकार में परमात्मा की पूजा करने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया है। शिवलिंग काला इसलिए दिखाया गया, क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं। परमपिता परमात्मा शिव देवताओं एवं समस्त मनुष्यात्माओं के पिता हैं। उनका दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं।

हम देखते है शिव के मंदिरों में शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। यदि शंकर स्वयं भगवान होते तो उन्हें ध्यान करने की क्या आवश्यकता है। ध्यानमग्न शंकर की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप हैं। शिव योगेश्वर हैं जबकि शंकर योगी की मूर्ति है। शिव रचयिता हैं, शंकर रचना हैं। हम शिवरात्रि मनाते हैं न कि शंकररात्रि। शंकर और शिव को एक मिला देने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे।

मुझे परमात्मा के अंग-संग रहने का सौभाग्य मिला

वैसे तो परमात्मा के बारे में सिर्फ हमने सुना था परमात्मा इस रूप में आता है, ऐसे मिलता है। परंतु मुझे कभी यह विश्वास नहीं हुआ कि हम कभी परमात्मा से मिल पाएंगे। मैं उन भाग्यशाली लोगों में से हूं जिन्हें केवल परमात्मा मिलन का ही नहीं, बल्कि हर पल उनके अंग-संग रहने का अवसर मिल रहा है। सत्तर के दशक में मैं अपनी नौकरी छोड़कर परमात्मा द्वारा जो दुनिया बदलने का महान कार्य चल रहा है उसमें शामिल हो गया।

ब्रह्माकुमार निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

सृष्टि के महापरिवर्तन का चल रहा है समय

इस सृष्टि के रचनाकार स्वयं परमपिता परमात्मा शिव का इस धरा पर आज से 79वर्ष पूर्व अवतरण हो चुका है। वे गीता में किए अपने वायदे अनुसार प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर और ज्ञान एंव सहज राजयोग की शिक्षा देकर सृष्टि के महापरिवर्तन का कार्य कर रहे हैं। यह समय सृष्टि के महापरिवर्तन का समय चल रहा है।

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, अतिरिक्त सचिव, ब्रह्माकुमारीज़

आज भी उस ईश्वरीय शक्ति से मिलन होता है

जब मैं आबू पहुंचा तो देखा एक इतना धनवान व्यक्ति जिसका कनेक्शन महारानी एलिजा बेथ से लेकर तमाम नामीग्रामी व्यक्तियों के साथ है। वह एक झोपड़ी में बैठकर साधु की तरह तपस्या कर रहा है। मैं यह देखकर स्तब्ध रह गया। जब उन्होंने मुझे बच्चा कहकर बुलाया, तो मैंने हमेशा के लिए अपना जीवन समर्पित करने का निश्चय कर लिया और आज भी उस ईश्वरीय शक्ति से मिलन होता है।

ब्रह्माकुमार करुणा, प्रबंध निदेशक, पीस ऑफ माइंड चैनल, आबू रोड, राजस्थान

परमात्मा अवतरित हो चुके हैं

परमात्मा इस धरा पर आ चुके हैं। वे पिछले 79वर्ष से सहज राजयोग और सच्चा गीता ज्ञान दे रहे हैं। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझती हूं कि परमात्मा ने स्वयं अपने कार्य में मुझे सहयोगी बनाया। परमात्मा से मैं प्रतिदिन मिलन मनाती हूं। आप भी अपने परमपिता से एक बार जरूर मिलें।

ब्रह्माकुमारी आशा बहन, निदेशिका ओम् शांति रिट्रीट सेंटर, गुड़गांव, हरियाणा

परमपिता परमात्मा शिव अपने बच्चों को ढूढ़ रहे हैं

रूहानी प्यार आत्मा के सभी मूल्यों को जगा देता था। यह प्यार कभी भी मनुष्य के संग से नहीं पाया जा सकता है। शिव बाबा के साथ का अनुभव है स्पष्ट करना नामुमकिन है। क्योंकि ऐसा सुख और अनुभूति कभी नहीं हो सकती। सचमुच परमपिता परमात्मा इस दुनिया में अवतरित होकर अपने बच्चों को ढूढ़ रहे हैं और नई दुनिया बना रहे हैं।

ब्रह्माकुमार अमीरचंद, जोन इंचार्ज, पंजाब जोन

ईश्वर का कार्य कैसे होता है यह मैंने करीब से देखा है

ईश्वर का कार्य कैसे होता है और परमात्मा कैसे आकर कार्य करता है। यह मैंने करीब से देखा है। मेरे जीवन में कई ऐसे बदलाव आए जो परमात्माा के बिना हो ही नहीं सकता। जब हम बाबा के सम्मुख होते हैं और उनकी दृष्टि पड़ती है, तो स्वयं का अस्तित्व स्पष्ट महसूस होने लगता है। सारी कर्मेन्द्रिया और ज्ञानेन्द्रिया प्रफुल्लित हो जाती हैं। इसे बयां नहीं किया जा सकता।

ब्रह्माकुमारी सरला दीदी, जोनल इंचार्ज, ब्रह्माकुमारीज़, गुजरात जोन, अहमदाबाद

बाबा के वरदान से हर कार्य में सफलता मिलती है

मुझे 1964 में कोटा हाउस में बाबा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय बाबा की जो स्नेह भरी दृष्टि मुझ पर पड़ी उसकी अनुभूति आज भी साकार रूप में होती रहती है। बाबा ने मुझे वरदान दिया आप जब भी चाहो तब बाबा की याद से शक्ति ले सकती हो। आज इसी वरदान के कारण मुझे हर कार्य में सफलता स्वत: ही मिलती रहती है। लिखने और बोलने की शक्ति का वरदान बाबा का ही दिया हुआ है।

ब्रह्माकुमारी रानी बहन, जोनल इंचार्ज पटना-मुजफ्फरपुर

मैं बाबा के संग और बाबा मेरे संग हमेशा रहते हैं

मैं बाबा के संग और बाबा मेरे संग हमेशा रहते हैं। हमारे हर सांस में बाबा बसा है। शिवबाबा ने हमें अपना बना लिया और आज अपने सेवा का महान कार्य करा रहे हैं। ब्रह्मा बाबा हमेशा हम लोगों को ठाकुर कहकर पुकारते थे। हमें यह लगता ही नहीं कि हम परमात्मा के साथ रह रहे हैं, क्योंकि परमात्मा ने बिल्कुल मां-बाप जैसी हमारी पालना की। परमात्मा के साथ हमारा पूरा जीवन सफल हो गया। मनुष्यात्माएं सभी परमात्मा के बच्चे हैं और सभी को परमात्मा से आकर अपना वर्सा लेना चाहिए। क्योंकि समय बहुत तेजी से बीत रहा है। अभी नहीं तो कभी नहीं। परमात्मा पिता से मिलने का ये उचित समय है।

– राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

जैसे-जैसे बाबा को पहचानते गए बदलाव आता गया

मैं तो बचपन से ही ब्रह्मा बाबा के अंग-संग पली बढ़ी, लेकिन जिस तरह से शिवबाबा ने बाबा के तन में आकर नई दुनिया की स्थापना का कार्य प्रारंभ किया वह किसी अजूबे से कम नहीं था। उसमें भी माताओं बहनों को आगे रखकर जो एक नया मुकाम दिया, वह अपने आप में अनोखा और दिव्य था। जैसे-जैसे शिवबाबा को पहचानते गए जिंदगी में बदलाव और शक्ति बढ़ती गई। आज भी बाबा अवतरित होकर अपना कार्य करा रहे हैं। जल्दी ही नई दुनिया की स्थापना हो जाएगी। मुझे खुशी है सारा जीवन परमात्मा द्वारा रचे हुए यज्ञ में सफल हो गया। सर्व मनुष्य आत्माओं को परमात्मा का ये संदेश है सभी मनुष्य आत्माएं परमपिता परमात्मा से आकर अपने अधिकारों का वर्सा लें और नई दुनिया के सहभागी बनें।

राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका

परमात्मा शिव, ब्रह्मा से नई दुनिया की स्थापना करा रहे

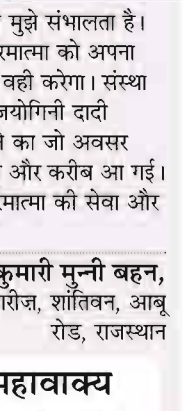

ब्रह्मा बाबा के साथ साकार में रहे हुए हैं। ईश्वरीय शक्ति को महसूस किया है। परमात्मा आ चुके हैं यह सत्य है। क्योंकि आज की ऐसी दुनिया में परमात्मा अपना कार्य करा रहे हैं। मैं अपने बारे में कहूं तो जिस तरह हमारे जीवन में एक अप्रत्याशित बदलाव आया वह किसी भी मनुष्य के लिए करना कठिन है। बिना परमात्मा के सान्निध्य के यह संभव नहीं है। यह कार्य कोई मनुष्य करा ही नहीं सकता। हम भक्ति में परमात्मा शिव को मानते हैं। हमेशा शिव परमात्माएं नम: कहते हैं। कभी भी शंकराए नम: नहीं कहते हैं। तो परमात्मा शिव अब प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से नई दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे हैं।

ब्रह्माकुमार बृजमोहन, प्रधान संपादक, प्यूरिटी मैगजीन, दिल्ली

परमात्मा को अपना बना लो तो आपकी पालना वही करेगा

मैं तो अपने जीवन को सोचकर धन्य हो जाती हूं मेरा जीवन कितना श्रेष्ठ है। पता नहीं मेरे में क्या विशेषता थी स्वयं परमात्मा ने 16 वर्ष की आयु में ही अपने विश्व परिवर्तन के कार्य में लगा लिया। इतना बड़ा कारोबार, इतना बड़ा परिवार ये सब परमात्मा का ही तो है। परमात्मा स्वयं मुझे संभालता है। मेरा अनुभव है यदि आप परमात्मा को अपना बना लो तो आपकी पालना वही करेगा। संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के साथ रहने का जो अवसर मिला। इससे मैं परमात्मा के और करीब आ गई। आज हमारे खून में सिर्फ परमात्मा की सेवा और याद दौड़ती है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मुन्नी बहन, कार्यक्रम प्रबंधक, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान

परमात्मा के महावाक्य सहज और असाधारण

चारों युगों में महात्माओं, साधुओं, संतों, विज्ञान की सारी बातें सुनने और देखने को मिलती रही हैं। सभी ने अपने-अपने रीति से शांति स्थापन की बात की है। परंतु समस्याएं घटने के बजाए बढ़ती ही गईं। जब मैं इस संस्था के संपर्क में आया और देखा यहां आने से ही समस्याओं का अपने आप समाधान होने लगा। परमात्मा की शिक्षा एवं उनके महावाक्य बिल्कुल सहज और असाधारण हैं। पवित्र बनने की शक्ति, सत्यता को परखने की शक्ति, संबंधों को निभाने की निपुणता, दिव्यता, मधुरता आदि की शक्ति स्वयं परमात्मा के सान्निध्य में आने से ही विकसित होने लगती है। उनकी एक दृष्टि जीवन बदल देती है। मैं तो समझ ही नहीं पाया परमात्मा ने कैसे मुझे अपना बनाकर इस विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बना लिया।

ब्रह्माकुमार मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

आप भी कर सकते हैं परमात्मा से संवाद

संवाद के लिए राजयोग की शिक्षा, कुछ नियम और मर्यादाओं का पालन जरूरी

आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा, लेकिन यह सच है। इसके साक्षी लाखों मनुष्यात्माएं हैं, जिनका परमात्मा से प्रतिदिन संवाद होता है। इसके लिए जरूरी हैं कुछ नियम और मर्यादाएं, जिनका पालन करके और सहज राजयोग की शिक्षा लेकर आप परमात्मा से संवाद कर सकते हैं। जैसा ही आपका परमात्मा से संवाद होने लगेगा इसका प्रभाव स्वत: जीवन में स्वयं को एवं दूसरों को दिखना शुरू हो जाएगा। परमात्मा से संवाद से आज कई लोग जो पहले तनाव, दु:ख, अशांति और बुराईयों में जीवन जी रहे थे, उनके जीवन में आज सुख, शांति, प्रेम, पवित्रता और आनंद है। कईयों को जीवन नर्क से स्वर्ग बन गया है, कईयों की जिंदगी को फिर से नई दिशा मिली है।

साधारण मनुष्य तन में करते हैं दिव्य प्रवेश

कहा जाता है बिन पग चले सुनै बिन काना, कर्म करहूँ, केहि विधि नाना। चूंकि परमात्मा पिता का अपना शरीर नहीं होता। वह तो ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप, अजन्मा, अकर्ता हैं। इसलिए इस दिव्य कार्य के लिए साधारण मनुष्य तन का आधार लेकर परकाया प्रवेश करते हैं और उन्हें नाम देते हैं प्रजापिता ब्रह्मा। परमात्मा शिव पहले ब्रह्मा को पुरानी दुनिया के विनाश और नई दुनिया की स्थापना का साक्षात्कार कराते हैं।

दादा लेखराज को बनाया अपना आधार

सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (अभी पाकिस्तान में है) में इस मिलन का एक छोटे स्तर से प्रारम्भ हुआ। क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। चूंकि परमात्मा को भारत और वन्दे मातरम् की गाथा को भी चरितार्थ करना था, इसलिए माताओं-बहनों के सिर पर ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

परमात्मा ने 14 वर्ष तक कराई कठिन तपस्या

परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने ब्रह्मा वत्सों की भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं- बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी अध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही हैं।

1950 में माउण्ट आबू में स्थानांतरण

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू में स्थानांतरण हुआ। यहां एक छोटे से रूप में संस्था के सेवा कार्यों की शुरुआत हुई। माउण्ट आबू से ही पूरी दुनिया में ईश्वरीय निर्देशन में अध्यात्म और परमात्मा के अवतरण के आने की सूचना और विश्व परिवर्तन के कार्य का शंखनाद हुआ। संस्था का मुख्यालय माउण्ट आबू में ही है।

आज वट वृक्ष का रूप ले चुकी संस्था

75 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। ब्रह्माकुमारीज़ के पूरे विश्व के 137 मुल्कों में करीब नौ हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्र हैं। इनके माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना और उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा अनवरत जारी है। आज पूरे विश्व में संस्था के दस लाख से अधिक नियमित विद्यार्थी हैं। जो नियमित परमात्मा के महावाक्यों का श्रवण और राजयोग के माध्यम से परमात्मा से सीधा संवाद करते हैं।

संवाद का माध्यम राजयोग

राजयोग ही वह विधि से जिसके माध्यम से हम अपने पिता परमात्मा से संवाद कर सकते हैं। संवाद भी ऐसा जिसमें न समय की सीमा है और न देह का बंधन। राजयोग से अंतर्मन के द्वार खुल जाते हैं, मन में शीतलता और चित्त शांत हो जाता है, जन्मों-जन्म के पाप भस्म होने लगते हैं, संस्कारों में परिवर्तन होने लगता है। जब हम सच्चे दिल, विश्वास, एकाग्रता के साथ परमात्मा पिता से संवाद करने लगते है तो परमात्मा की शक्तियों का प्रवाह मनुष्यात्मा में होने लगता है। उसकी बुद्धि के कपाट खुल जाते हैं, बुराईयों के भूत भागने लगते हैं और सदगुणों की सुगंध से उसका जीवन कमल पुष्प समान बन जाता है। उसे उठते, बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते प्रभु मिलन का एहसास होने लगता है। राजयोगी व्यक्ति का प्रभाव दूसरों को भी दिखने लगता है। वह सबकी प्रेरणा का पात्र बन जाता है। सबका प्रिय बन जाता है। लोग उसका अनुसरण करने लगते हैं। राजयोगी पर परमात्मा पिता भी बलिहार जाते हैं और बदले में 21 जन्म की स्वर्ग की बादशाही देते हैं।

79 वर्ष से अपना कार्य कर रहे परमात्मा

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत् अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्। गीता में अपने वायदे अनुसार परमपिता शिव परमात्मा का भारत की पावन भूमि पर दिव्य अवतरण हो चुका है। वे पिछले 79 वर्षों से गुप्त रीति से अपना कार्य कर रहे हैं। इस विकारी, तमोगुणी, कलियुगी और दु:खों से भरे संसार को सुखमय बनाने के लिए परमात्मा पिता अपना कार्य कर रहे हैं। परमात्मा मानवमात्र को सच्चा गीता ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर मनुष्य को पतित से पावन बनाने का कार्य कर रहे हैं। इसके साक्षी लाखों वे मनुष्यात्माएं हैं जिनका जीवन परमात्मा से मिलन के बाद पूरी तरह से बदल गया है। जिनका जीवन पहले बुराईयों और अवगुणों से भरा था आज वह सद्गुणों की मूरत बन गया है। लाखों मनुष्यात्माएं प्रतिदिन सुबह अमृतवेला परमात्मा से मिलन मनाते हैं। आप भी इस मिलन के साक्षी बन सकते हैं, बशर्ते इसके लिए कुछ नियम, मर्यादाएं और राजयोग की विधि जानना जरूरी है।

परमात्मा ने स्वयं दिया था अपना परिचय

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ।

दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आयी। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया कि-

निजानन्द् स्वरूपं शिवोहम्, शिवोहम्।
आनन्द स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्।
प्रकाश स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्।

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

यह सच है परमात्मा आ चुके हैं

हां, मैं बिल्कुल ईश्वर से साक्षात् में मिला हूं। गुलजार दादी के अंदर बाबा आते है। मैं बिल्कुल सामने बैठा था। जब दादी के अंदर बाबा आए तो सब कुछ बदल गया। परमात्मा के सामने मैं बैठा था, तो सोचा कि बाबा क्यों नहीं बुला रहे है। तो तुरन्त बाबा ने मुझे बुलाया और मैं उनके सामने जाते ही सबकुछ भूल गया और मुझे अपनी असलियत की स्पष्ट छवि महसूस होने लगी है। लगा जैसे मैं यहां हूं ही नहीं। यह सच है परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर नई दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे है।

- न्यायाधीश रमेश गर्ग, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, गुवाहाटी, उच्च न्यायालय

गहन शांति की अनुभूति हुई

सन् 2001 में मैं परमात्मा से मिलने के लिए पहली बार मधुबन आया। उस समय बाबा की दृष्टि से मुझे इतना प्यार मिला कि मेरे दिल से स्वत: ही आवाज आने लगी कि यह परमात्मा के सिवाए और कोई हो ही नहीं सकता है। उनकी दृष्टि पड़ते ही मुझे बहुत ही गहन शांति की अनुभूति हुई। इससे मैं अपने शरीर का भान ही भूल गया और मुझे आत्मिक अवस्था की अनुभूति हुई। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं, परमात्मा का अवतरण हो चुका है।

- सुशील चंद्रा, हेड ऑफ डिपार्टमेंट, बायो मेडिकल, डीआरडीओ, दिल्ली

समस्याओं का समाधान हो गया

ब्रह्माकुमारीज़ में सात दिन के कोर्स के बाद मैं आत्मा और परमात्मा के तथ्य से बहुत प्रभावित हुआ। बेटे की शादी के बाद पारिवारिक परिस्थितियों ने भी ऐसा जकड़ा कि लगा अब कभी इससे निकल नहीं पाएंगे, लेकिन मुश्किल समय में मुझे बाबा ने बहुत मदद किया। मैं उस विकट परिस्थिति से झट से बाहर निकल आया। परमात्मा शिव बाबा में अति निष्ठा और विश्वास है। उनसे हर पल मार्गदर्शन लेता हूं। यह सच है भगवान धरती पर आ चुके हैं। ब्रह्माकुमारीज़ में आकर आप भी भगवान से मिल सकते हैं।

- डी.सी. लाखा, पूर्व कमिश्नर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

परमात्मा का ईश्वरीय संदेश मिला

मेरा अति सौभाग्य था ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के माउण्ट आबू में मुझे परमपिता परमात्मा शिव बाबा से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। यहां मुझे परमपिता परमात्मा का ईश्वरीय संदेश और वरदान आदरणीय दादी हृदयमोहिनी जी के द्वारा मिला। मैं अपने-आप को भाग्यशाली समझता हूं जो मुझे स्वयं शिव बाबा से मिलन मनाने का शुभ अवसर मिला। मुझे यहां आकर के अच्छी अनुभूति हुई। संस्था समाज में जागृति लाने का सराहनीय कार्य कर रही है।

डीआर कार्तिकेयन, पूर्व निदेशक, सीबीआई, दिल्ली

राजयोग मेडिटेशन से मेरा क्रोध शांत हो गया

हमारे यहां जो नियम बने होते हैं उसी पर चलना होता है जबकि यहां परिवार की भावना से काम किया जाता है। यहां का अनुशासन अलग प्रकार का है जिससे लोग बिना डर के काम करते हैं। मुझे स्वयं को जानने का अवसर यहां ही मिला। संस्था में आने के बाद मेरा क्रोध शांत हो गया। पहले मुझे भगवान का परिचय नहीं था लेकिन यहां भगवान भी मिला और परमात्मा का सत्य परिचय भी। अब मैं स्वयं को भगवान की छत्रछाया में अनुभव करता हूं।

- देवब्रता दास, संयुक्त सचिव, नीति आयोग, भारत सरकार

यह सच है परमात्मा आ चुके हैं

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र के सामने हमारा स्कूल होने के कारण एक दिन मैं वहां गया। वहां की शांति और पॉवरफुल वातावरण ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यह सच है परमात्मा का आगमन इस धरती पर हो चुका है। मैंने खुद परमात्मा से मिलन की अनुभूति की है। उनसे मिलन की क्षण सुंदर और शक्तियों से भरपूर कर देते हैं। इस ज्ञान को जीवन में अपनाने के बाद मेरा जीवन पूरी तरह से बदल गया। अब मेरा मन पहले की अपेक्षा ज्यादा शांत रहता है। परमात्मा ने हमारे पूरे परिवार को दैवी तुल्य बना दिया।

- निमिष पटेल, ब्लॉक विकास अधिकारी, गुजरात

.....जैसे मैं परमात्मा की छत्रछाया में बैठा हूं

मुझे यहां बहुत ही असीम शांति और आनंद की अनुभूति हुई। ब्रह्माकुमारीज़ विश्व की अनोखी संस्था है। पूरे विश्व में यही एकमात्र स्थान है जहां किसी भी प्रकार के प्रशासन की आवश्यकता नहीं होती है। हमें राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास के दौरान ऐसी अनुभूति हुई जैसे मैं परमात्मा की छत्रछाया में बैठा हूं। यह संस्था व्यक्ति को स्वयं का साक्षात्कार कराती हो।

डॉ. रामकुमार सिंह, तकनीकी सलाहकार,नेशनल हॉल्टीकल्चर मिशन, पटना

परमात्मा का मुख्य कार्य अधर्म का नाश और सतधर्म की स्थापना

जब-जब इस दुनिया में अधर्म का बोलबाला हो जाता है। पाप अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाता है। रिश्तों की मर्यादाएं तार-तार हो जाती हैं। अपने ही अपनों के खून के प्यासे हो जाते हैं। चारों तरफ दु:ख अशांति, अत्याचार अपनी जड़े जमा चुका होता है। दु:खों से पीड़ित मनुष्य प्रभु पिता को पुकार रहा होता है ऐसे समय में सतधर्म और नई दैवी सृष्टि की स्थापना करने और मानवमात्र को दु:खों से छुड़ाने के लिए परमधाम से परमपिता शिव परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। वह भारत की पावन भूमि को अपना बसेरा बनाते हैं। फिर यही से पूरे विश्व में शुरू होता है नई संस्कृति, नए समाज और नई दुनिया की तैयारी का सिलसिला।

वर्तमान समय कलियुग का सारा काल ही महारात्रि

वर्तमान समय कलियुग का अंतिम चरण चल रहा है, यह सारा काल, रात्रि अथवा महारात्रि ही है। हम सभी नर-नारियों को यह शुभ संदेश देना चाहते है कि अब परमपिता परमात्मा शिव संसार को पावन तथा सुखी बनाने के लिए फिर से प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। अत: हम सबका कर्तव्य है कि उनकी आज्ञानुसार हम नैष्ठिक पवित्रता और शुद्धता का पालन करें और शिव के अर्पण होकर संसार की ज्ञान सेवा करे। वास्तव में यही सच्चा पाशुपत व्रत है। इसका फल मुक्ति और जीवन-मुक्ति की प्राप्ति माना गया है। अब मनुष्यों को चाहिए कि विकारों रूपी विष से नाता तोड़कर परमात्मा शिव से अपना नाता जोड़े।

आध्यात्मिक ज्ञान समाज के लिए जरूरी

विश्व एक परिवार और एक ईश्वर के सिद्धांत से पूरी दुनिया में अमन और शांति का वातावरण बनाया जा सकता है। यहां दिया जा रहा आध्यात्मिक ज्ञान समाज के लिए बहुत जरूरी है। राजयोग के अभ्यास से हमारे अंदर धैर्यता, सहनशीलता आदि गुणों का विकास होता है। हमारी दिल से यह दुआ है संस्था पूरे विश्व में शांति स्थापन करें, भ्रातृत्व की भावना स्थापित करे।

- परमानंद झा, पूर्व उपराष्ट्रपति, नेपाल

राजयोग से तीन गुना बढ़ जाती माइंड की क्षमता

यदि दुनिया को बचाना है तो इस आध्यात्मिक ज्ञान के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। जिस तरह से लोग दु:खी, तनावग्रस्त, अनेक बीमारियों से जूझ रहे हैं, आत्महत्याएं कर रहे हैं। इससे बचने का एकमात्र तरीका संस्था बता रही है। इससे न केवल जीवन जीने का तरीका आता है, बल्कि पूरी जिंदगी बदल जाती है। राजयोग के अभ्यास से माइंड की क्षमता तीन गुना बढ़ जाती है।

- बिस्वरूप रॉय चौधरी, मेमोरी रिकॉर्ड होल्डर, गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड, दिल्ली

हां, परमात्मा का अवतरण हो रहा है

कुछ वक्त पहले तक मेरा पूरा परिवार भक्ति मार्ग में चलता था, लेकिन मुझे उससे संतुष्टि नहीं होती थी। वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर मैंने भक्ति मार्ग के तथ्यों को तोड़ा और इस तथ्य को स्वीकार किया कि भगवान ज्योतिर्बिन्दु, निराकार है, वह एक है, कण-कण में नहीं है, परमशक्ति है सर्वोच्च है। परमात्मा का अवतरण हो रहा है नई दुनिया बनाने के लिए। यह वैज्ञानिक स्तर से भी सत्य है।

- नारायनन नायर, वैज्ञानिक, एनबीआरआई, लखनऊ

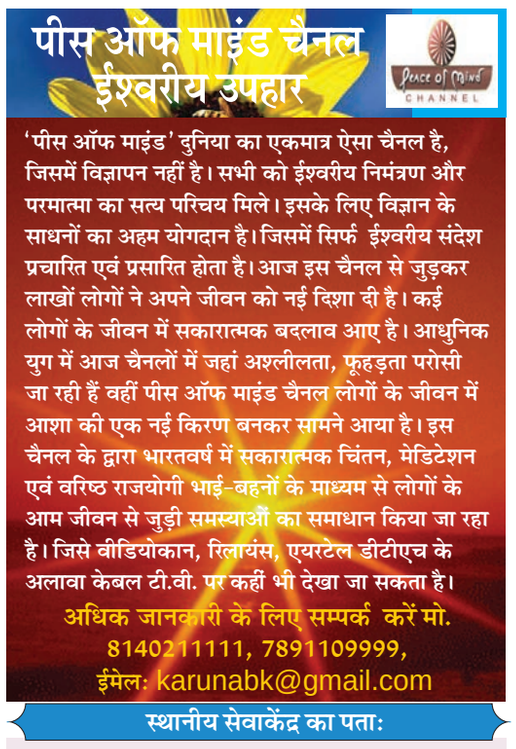

प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के लिए प्रकाशित एवं डीबी सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित। **सलाहकार संपादक:** प्रो. कमल दीक्षित **प्रबंध संपादक:** ब्र.कु. शांतनु, **संपादक:** ब्र.कु. कोमल, **संयुक्त संपादक:** ब्र.कु. पुष्पेन्द्र। RNI NO. - RJHIN/2013/53539,
Postal Regd. - RJ/SRO/9662/2015-2017, Posting on 18 & 20 of Every Month only at shantivan Sub-Post Office, Abu Road, Raj - 307510

पत्र व्यवहार का पता

संपादक: ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस शांतिवन, तलहटी, आबू रोड- 307510, जिला-सिरोही, मो. 9413384884, 9887516335, ईमेल: shivamantran@bkivv.org, shivamantran.media@gmail.com